(पृष्ठ २४ का शेष...)

श्लोकार्थ :ह्न इसप्रकार जिनमार्गरूपी रत्नाकर में से पूर्वाचार्यों ने प्रीतिपूर्वक षट्द्रव्यरूपी रत्नों की माला भव्यों के कण्ठाभरण हेतु बाहर निकली है।

यहाँ छह द्रव्यों का वर्णन किया। वीतरागी ज्ञान में छह द्रव्यों को जाना। वीतरागी मार्ग के अतिरिक्त अन्य कहीं छह द्रव्यों का वर्णन नहीं है। इस वीतरागी जिनमार्गरूपी दरिया में से छह द्रव्यरूप रत्नों की माला भव्यजीवों के कण्ठाभरण के लिए संत मुनिराज बता रहे हैं।

कोई द्रव्य किसी अन्य के कारण नहीं है। कोई द्रव्य पर को लाभ-नुकसान नहीं कराता है ह्न इसप्रकार छहद्रव्यों का वर्णन करके स्वतंत्रता बता रहे हैं। अभव्य के लिए यह छह द्रव्यरूप रत्नों की माला आभरण नहीं है।

आत्मा चैतन्य ज्योति है। वह जैसा है, वैसा ही जिनमार्ग में वाणी द्वारा स्पष्ट किया है। कोई द्रव्य किसी द्रव्य को नहीं कर्त्ता और वे एक-दूसरे की सहायतारूप भी नहीं है, प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र है। आत्मा शरीर को करे तो शरीर स्वतंत्र नहीं रहेगा। आत्मा स्वयं की पर्याय में विकारी-अविकारी भाव तो करता है; किन्तु पर में कुछ भी कार्य नहीं करता। छह द्रव्य स्वतंत्र हैं, यह बात भव्य जीव जानते हैं। ●

अब लाइव प्रवचन इन्टरनेट पर..

जयपुर : टोडरमल स्मारक भवन में चलनेवाले कार्यक्रम अब इंटरनेट पर लॉइव हो गये हैं। अब टोडरमल स्मारक भवन जयपुर से पूरे विश्व को जोड दिया गया है, जिससे यहाँ प्रतिदिन चलनेवाले दोनों समय के प्रवचन कहीं से भी देखे व सुने जा सकते हैं। यहाँ चलनेवाले प्रवचनों का समय प्रात:काल 8.30 से 9.15 एवं सायंकाल 8.00 से 8.45 बजे तक है।

ज्ञातव्य है कि इसका विधिवत् उद्घाटन 32 वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के मध्य दिनांक 30 जुलाई को पण्डित शिखरचन्दजी विदिशा के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि अब विश्व के सभी लोग **www.ustream.tv/channel/ptst** इस वेबसाईट पर यहाँ के दैनिक कार्यक्रमों को सुन सकेंगे और देख भी सकेंगे। इसमें और एक विशेषता है कि ये सभी कार्यक्रम डाऊनलोड होंगे, जिससे हम उसे कभी भी देख सकेंगे। इस पावन अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि आज तक मात्र एक जगह पर प्रवचन सुने जाते थे, लेकिन अब पूरा विश्व सुनेगा। यह जैनधर्म के प्रचार के लिये बहुत बड़ी उपलब्धि है।

इस संबंध में विशेष जानकारी के लिये श्री पीयूष जैन से 09785643202 पर संपर्क करें।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 314 अंक : 2

तब पछितैहै प्राणी

आया रे बुढापा मानी, सुधि बुधि बिसरानी।। टेक।।
श्रवन की शक्ति घटी, चाल चले अटपटी।
देह लटी, भूख घटी, लोचन झरत पानी।।
आया रे बुढापा मानी, सुधि बुधि बिसरानी।।1।।
दांतन की पंक्ति टूटी, हाड़न की संधि छूटी।
काया की नगरि लूटी, जात नहिं पहिचानी।।
आया रे बुढापा मानी, सुधि बुधि बिसरानी।। 2।।
बालों ने वरन फेरा, रोग ने शरीर घेरा।
पुत्र हू न आवैं नेरा, औरों की कहा कहानी।।
आया रे बुढापा मानी, सुधि बुधि बिसरानी।। 3।।
भूधर समझ अब, स्वहित करैगो कब।
यह गति ह्वै जब, तब पछितैहै प्राणी।।
आया रे बुढापा मानी, सुधि बुधि बिसरानी।। 4।।

– कविवर पण्डित भूधरदासजी

छहढाला प्रवचन

निर्जरा और मोक्ष तत्त्व संबंधी भूल

रोकी न चाह निजशक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय।
याही प्रतीति जुत कछुक ज्ञान, सो दुःखदायक अज्ञान जान।।७।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

मोक्ष में कुछ खाना-पीना आदि भी नहीं है; क्योंकि वहाँ आकुलता ही नहीं है। जहाँ खाने-पीने की कोई इच्छा ही नहीं, तब फिर वहाँ खान-पान का क्या काम? 'आत्मा स्वयं सुखधाम है, फिर विषयों का क्या काम ? जिसको आत्मा में से ही सुख का अनुभव हो रहा है, उसे बाह्य विषयों का क्या काम है ? जहाँ आत्मा के सहज सुख में लीनता है, वहाँ बाह्य पदार्थ की इच्छा ही नहीं रहती। सुख तो आत्मा में से उत्पन्न होता है; किसी बाह्य वस्तु में से नहीं आता। बाह्य पदार्थों का उपभोग करना वही चाहेगा जो इच्छा से दुःखी होगा । जो स्वयं अपने आप सुखी होगा, वह अन्य पदार्थ की इच्छा क्यों करेगा ? जो निरोग हो, वह दवाई की इच्छा क्यों करे? मुक्त जीवों को जगत् के सभी पदार्थों का ज्ञान है; परन्तु इच्छा किसी की नहीं है। इच्छा न होने से दुःख भी नहीं है; वे अपने चैतन्यसुख के ही वेदन में लीन हैं। यदि ऐसी मोक्षदशा को पहचाने तो आत्मा के स्वभाव की पहचान हो जाय; राग में या विषयों में सुख होने की बुद्धि छूट जाय और उनसे भिन्न आत्मा का अनुभव हो। इसी का नाम है वीतराग-विज्ञान और यही है मोक्षसुख की राह।

जिसको ऐसा वीतराग-विज्ञान नहीं है और विषयों में या राग में जिसको सुख लगता है, वह सचमुच में मोक्ष को नहीं चाहता, मोक्ष के स्वरूप को वह पहचानता भी नहीं है, वह तो अज्ञान से राग/विषय को ही चाहता है। अहो ! मोक्ष तो परम आनन्द है, परम निरपेक्ष है, जिसमें जगत् के किसी भी पदार्थ की अपेक्षा नहीं है, अकेले आत्मा में से ही प्रगट होनेवाला पूर्ण आनन्द है। ज्ञानी उसकी भावना भाते हैं।

अज्ञानी को तो ऐसे मोक्ष का ज्ञान नहीं है, वह तो अज्ञान से मोक्ष के नाम पर राग की ही भावना भाता है। मोक्ष में राग रहित पूर्ण शान्ति है; यहाँ भी राग का जितना अभाव हुआ, उतनी ही शांति है। बाह्यपदार्थ के उपभोग में से शांति नहीं आती; बाह्यपदार्थ तो जड़ और पर हैं, उनकी इच्छा दुःख है; 'सुख' में किसी की इच्छा नहीं रहती, सुख तो आत्मा का स्वभाव है ह्न ऐसी पूर्ण सुखदशा ही मोक्ष है।

मोक्ष में सिद्धभगवान सदाकाल अपने आत्मिक सुख को भोगते हैं। अज्ञानी कहते हैं कि 'जो हमारा कुछ भी न करे - ऐसे सिद्धभगवान से हमें क्या काम? ऐसे सिद्धभगवान हमें नहीं चाहिए।' इसका अर्थ तो यह हुआ कि उसको मोक्ष ही पसन्द नहीं है, उसको तो पर की कर्तृत्वबुद्धि के मिथ्यात्व में रुलना है। अरे भाई ! सिद्धपद की तुम्हें पहचान ही नहीं है। जरा सोचो तो सही ह्न यहाँ तुम भी क्या करते हो? पर का कार्य तो तुम भी नहीं कर सकते, तुम मात्र तुम्हारे में ही राग और अज्ञान करके दुःख को भोगते हो; यह संसार है; जबकि सिद्ध भगवान वीतराग-विज्ञान से परमसुख को भोगते हैं, वे निजानन्द के अनुभव में मग्न रहते हैं और आकुलता जरा भी नहीं करते; यह मोक्ष है। सिद्ध भगवन्तों को स्वरूप में पूर्ण स्थिरता होने से पूर्ण सुख है; साधक को भी स्वरूप में जितनी स्थिरता है, उतना सुख है। अज्ञानी को तो अपने स्वरूप की पहिचान ही नहीं; अतः रागादि परभाव में ही लीनता से वह दुःखी है, मोक्षसुख कैसा है ? वह उसका स्वाद भी नहीं जानता।

आत्मा स्वयं आनन्दस्वरूप है, केवलज्ञान की शक्तिवाला है, राग उसका स्वरूप नहीं, किन्तु चेतना उसका स्वरूप है; अत: स्वसन्मुख होकर अपनी इस शक्ति को प्रगट करना चाहिये; किन्तु अज्ञानी निज शक्ति को भूलकर राग को ही प्रगट करता है और उससे अपने को लाभ मानता है। आत्मशक्ति की प्रतीतिरूप सम्यग्दर्शन के बिना संवर-निर्जरा या मोक्ष नहीं हो सकता। इच्छा से भिन्न चैतन्यस्वरूप को जाने बिना इच्छा को रोकेगा कौन? निजस्वरूप में स्थिर होने से ऐसा आनन्द व शुद्धता प्रगट होते हैं कि कोई इच्छा ही नहीं रहती, तभी इच्छा के निरोधरूप तप तथा निर्जरा होती है।

जिसको भान ही नहीं कि मैं कौन हूँ ? वह एकाग्र किसमें होगा? जिसका ऐसा

अभिप्राय है कि दुनिया में जीवों का कल्याण करने के लिए हमें राग करना चाहिए। यदि दूसरों का कल्याण होता हो तो भले ही हमें भव करना पड़े ह्न यह बुद्धि मिथ्यादृष्टि की है, उसने राग को लाभरूप मान लिया है और रागरहित अपने चेतन स्वरूप को नहीं माना है। अरे अविवेकी ! तू ज्ञानरूप है कि रागरूप है? क्या तेरे राग करने से दूसरों का कल्याण हो जायगा? दूसरों का कल्याण स्वयं उनके करने से होगा कि तू कर देगा? अभी तेरे कल्याण की राह भी तुझे मालूम नहीं है, तू व्यर्थ में दूसरों की चिंता क्यों कर रहा है?

'जो दूसरों को तारे वह स्वयं तिरे' ह्न ऐसी पराश्रय की बात लोगों को अच्छी लगती है, किन्तु वह सच्ची नहीं है। और 'जो आप तिरे, वह दूसरे को तारे' ह्न ऐसा भी नहीं है। आत्मा की स्वाधीन शक्ति का लक्ष न होने से तथा पराश्रयबुद्धि होने से लोग ऐसा समझते हैं कि कोई ज्ञानी गुरु या भगवान हमें तार देंगे; किन्तु यह सच नहीं है। भाई ! तू ही तेरा तारक है, दूसरा कोई तेरे को तारनेवाला नहीं है। यदि कोई तारेगा, तब फिर दूसरा कोई तेरे को डुबा देगा, तब तू क्या करेगा? अतः पराश्रयबुद्धि छोड़ दे। जीव स्वयं अपने में आत्मा की पहिचान करके; वीतराग-विज्ञान से राग का अभाव करके तिरता है; और अन्य जीव भी जब ऐसा वीतराग-विज्ञान करेंगे, तभी वे तिरेंगे; इसप्रकार वीतराग-विज्ञान ही सभी के लिये मुक्ति का उपाय है। उसमें अन्य जीव कुछ नहीं करता।

दूसरों को तारने की इच्छा आत्मा का स्वरूप नहीं है। उपदेश की भाषा आत्मा की नहीं है, इच्छा से या भाषा से आत्मा को कोई लाभ नहीं; ज्ञानस्वरूपी आत्मा उन दोनों से भिन्न है, उसके वेदन में इच्छा का अभाव है ह्न इसप्रकार जिसे इच्छा के निरोधरूप तप होता है और उसे ही निर्जरा होती है। जो शरीर को कष्ट देने से निर्जरा होना मानता है, उसको निजात्मशक्ति के विकासरूप निर्जरा का ज्ञान नहीं है, उसे तो देहबुद्धि है; अतएव मिथ्यात्व का बड़ा आस्रव है। निर्जराधर्म में तो आत्मा की शक्ति का विकास है, शुद्धता की वृद्धि है, आनन्द का वेदन है; उसमें कष्ट नहीं, दुःख नहीं। ऐसी निर्जरा ही मोक्ष का कारण है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

काल के अतिरिक्त अस्तिकाय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 34 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

एदे छद्दव्वाणि य कालं मोत्तूण अत्थिकाय त्ति।
णिद्दिट्ठा जिणसमये काया हु बहुप्पदेसत्तं ।।३४।।

बहुप्रदेशीपना ही है काय एवं काल बिन।
जीवादि अस्तिकाय हैं ह्न इस भांति जिनवर के वचन।।३४।।

बहुप्रदेशीपना ही कायत्व है। काल को छोड़कर इन छह द्रव्यों को (अर्थात् शेष पाँच द्रव्यों को) जिन वचन में 'अस्तिकाय' कहा गया है।

(गतांक से आगे...)

बहुप्रदेशी को काय कहते हैं। यह शरीर अनन्त परमाणुओं का पिण्ड है। इसप्रकार जो द्रव्य एक प्रदेश से अधिक प्रदेशवाला होता है, उसे काय कहते हैं। आत्मा असंख्यातप्रदेशवाला है; अतः काय है। धर्म-अधर्म के भी असंख्य प्रदेश हैं और आकाश के अनंत प्रदेश हैं तथा पुद्गल संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रदेशी है ह्न इसप्रकार पाँच द्रव्यों को काय कहा। कालद्रव्य एक प्रदेशी है; अधिक प्रदेशी नहीं, अतः उसे काय संज्ञा नहीं है।

अस्तित्व अर्थात् सत्ता। सत्ता दो प्रकार की है ह्न महासत्ता और अवान्तरसत्ता। इसलिये सत्ता सप्रतिपक्ष है; क्योंकि महासत्ता और अवान्तरसत्ता परस्पर विरोधी है।

समस्त वस्तु विस्तार में व्यापनेवाली महासत्ता है। 'सब कुछ है' इसका नाम महासत्ता है। और प्रतिनियत वस्तुओं में व्यापनेवाली अवान्तरसत्ता है। एक-एक वस्तु को भिन्न करनेवाली अवान्तरसत्ता है। एक वस्तु में यह गुण, यह पर्याय इसप्रकार भिन्नता करनेवाली अवान्तरसत्ता है।

महासत्ता वीतरागीपन बताती है। निगोद में जीव है, संसार में जीव है, सिद्ध

है, सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि है। जो है, वह है। इसमें शुभाशुभ पर्याय कौन-कैसी? यह प्रश्न भी नहीं है। द्रव्य-गुण-पर्याय ह्न ये सब कुछ महासत्ता में शामिल है। उसमें किसी के कारण कोई नहीं है। यह नहीं तो यह नहीं ह्न ऐसा भी नहीं है ह्न ये बात पंचास्तिकाय में विस्तार से है।

महासत्ता वीतरागता को स्पष्ट करती है। एक पदार्थ अन्य के कारण हो तो महासत्ता नहीं रहती। आत्मा है, पर्याय में राग भी है, निमित्त है, गुण भी है, परपदार्थ भी है; ये सब है; पर किसी अन्य कारण से नहीं है। सबका अस्तित्व है ह्न ऐसा निश्चित करने पर धर्म होता है; क्योंकि महासत्ता का ज्ञान होने पर साधकपना होता है। **'है'** अर्थात् किसी के कारण कोई नहीं, इसप्रकार भेदविज्ञान होता है। जैसे सिद्ध हैं, वैसे ही तुम भी हो और देव-गुरु-शास्त्र भी है। ये सब स्वतंत्र और पृथक्-पृथक् हैं, इससे वीतरागता और भेदज्ञान होता है। 'है' अर्थात् नहीं है, यह भी नहीं और 'है' अर्थात् एक को छोड़कर अन्यरूप है ह्न ऐसा भी नहीं।

सिद्ध हो अथवा निगोद, एक परमाणु हो अथवा महास्कन्ध ह्न ये सब 'है' में आ जाता है। कोई विकारवाला हो अथवा अविकार वाला हो, जो भी हो, वह स्वयं के होने के कारण ही है अर्थात् जहाँ पराधीनता उड़ गई और स्वतंत्रता आ गई, वहीं सम्यग्दर्शनरूप प्रथम धर्म हुआ; क्योंकि महासत्ता को स्वीकारते ही वीतरागदृष्टि हो जाती है।

जिस क्षेत्र में जो वस्तु है, वह उसके स्वयं के कारण है। एक द्रव्य अन्य द्रव्य को लेकर रहे तो महासत्ता का अभाव होगा। महासत्ता यह नहीं, ऐसा नहीं ह्न ऐसे स्वरूपवाली नहीं है, अपितु 'है' पना बताती है। विद्यमानपने में अविद्यमानपना नहीं होता और अन्य के कारण भी नहीं होता। कैंची के कारण अन्य वस्तु अथवा दीवाल के कारण छत आदि टिकी है ह्न ऐसा मानें तो महासत्ता नहीं रहती। 'है' पने में अभाव की बात नहीं है। महासत्ता का ज्ञान वीतरागदृष्टिपूर्वक ही होता है। 'जैसा है, वैसा है' ऐसा कहकर महासिद्धपना निश्चित किया है। सर्व में व्यापनेवाली महासत्ता है और महासत्ता को जाननेवाला ज्ञान ही मोक्षमार्ग है।

प्रतिनियत वस्तु में व्यापनेवाली अवान्तरसत्ता है। आत्मा है, पुद्गल है,

परमाणु है, स्कन्ध है ह्न ये अवान्तर सत्ता है। आत्मा के द्रव्य-गुण-पर्याय में भेद करें तो वह भी एक दूसरे के कारण नहीं है; अतः अवान्तरसत्ता में भी वीतरागता ही है। महासत्ता लें चाहें अवान्तरसत्ता लें; परन्तु वे किसी के कारण से है ह्न ऐसा नहीं। पर के कारण मानें तो अवान्तरसत्ता व महासत्ता नहीं रहती।

समस्त व्यापकरूप व्यापनेवाली और प्रतिनियत एकरूप व्यापनेवाली महासत्ता है और प्रतिनियत एक पर्याय में व्यापनेवाली अवान्तरसत्ता है। पदार्थ की अस्ति ह्न ऐसा भाव वह अस्तित्व है। ऐसे महासत्ता और अवान्तरसत्ता के स्वरूप को समझे तो वीतरागता आवें ह्न यही इस नियमसार का फल है।

यह अजीव अधिकार है। भगवान ने छहद्रव्य स्वयं अस्तिरूप देखे हैं, जो स्वयं के कारण विद्यमान है।

इन छह द्रव्यों में अस्तित्व और कायत्वरूप सहित पाँच अस्तिकाय है। कालद्रव्य को अस्तित्व है, कायत्व नहीं; क्योंकि काय के हेतु बहुप्रदेशीपने का उसके अभाव है। जगत में जो वस्तु है, उसकी व्याख्या होती है। जो नहीं है, उसकी व्याख्या नहीं होती। वस्तु है तो उसके गुणपर्याय भी है। अस्तिपने में छह द्रव्य और कायत्व में पाँच द्रव्य आते हैं। जिसप्रकार शरीर अधिक रजकणों का पिण्ड है, वह काय है। इसमें बहुत से प्रदेशों का सद्भाव है। काल में प्रदेशों का अभाव है; क्योंकि वह एकप्रदेशी है। इसप्रकार अस्तिकाय का वर्णन किया।

अब, गाथा ३४ की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्लोक कहते हैं ह्न

(आर्या)

इति जिनमार्गाम्भोधेरुद्धृता पूर्वसूरिभिः प्रीत्या।
षड्द्रव्यरत्नमाला कंठाभरणाय भव्यानाम् ।।५१।।

(हरिगीत)

आगम उदधि से सूरि ने जिनमार्ग की षट्द्रव्यमय।
यह रत्नमाला भव्यकण्ठाभरण गूँथी प्रीति से।।५१।।

(शेष पृष्ठ - 4 पर...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : सम्यग्दर्शन होने के पश्चात् साधुपने के लिए व्रतादि तो करने पड़ेंगे न ?

उत्तर : भाई ! साधुपना कहीं बाहर से अथवा व्रतादि के विकल्पों से नहीं आता; जहाँ अतीन्द्रिय आनन्द की जमावट हो, वहाँ साधुपना है। आनन्द की उग्र जमावट होने पर व्रतादि के विकल्प भी सहज ही होते हैं; किन्तु अन्तर में स्थिरता का होना ही साधुपना है।

प्रश्न : महाव्रत के भाव भले ही बन्ध के कारण हों; परन्तु मुनिराज के वे सहज आते हैं, फिर उनका निषेध कैसे ?

उत्तर : महाव्रत के भाव मुनिराज को भले ही सहज आते हों, तथापि वे निषेधने योग्य ही हैं।

प्रश्न : महाव्रत तो महापुरुष पालन करते हैं, इसीलिए उन्हें महाव्रत कहते हैं, उनका निषेध कैसे होगा ?

उत्तर : महापुरुष अन्तरस्वरूप में स्थिर हुए हैं, उसके साथ व्रत के परिणाम आते हैं, इसलिए उन्हें महाव्रत कहते हैं, परन्तु हैं तो वे बन्ध के ही कारण; अतः उनका निषेध किया गया है।

प्रश्न : मुनिपने में व्रत-तप-शीलादि आचरण करना कहा है। जो कर सकते हैं, उसे तो बन्धनरूप और संसार का कारण कहा, तो फिर मुनियों को शरण किसका रहा ? मुनिपना किसके आश्रय पलेगा ?

उत्तर : व्रत-तप-शीलादि शुभाचरणरूप कर्म का निषेध करते हुये, निष्कर्म अवस्थारूप प्रवर्त्तते हुए, मुनि कहीं अशरणरूप नहीं हैं; ज्ञानस्वरूप में आचरण करने वाले मुनि को ज्ञान ही शरणरूप है। ज्ञान का शरण लेते हुए मुनिराज परम अमृत का आस्वादन करते हैं, अतः शुभाचरण के निषेधक मुनियों को ज्ञान ही परम शरणरूप है।

प्रश्न : श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने भी तो महाव्रतों को पाला था ?

उत्तर : श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने महाव्रतों को पाला नहीं था, किन्तु महाव्रतों के विकल्प आये थे, उन्हें जाना था। उन विकल्पों का उनके स्वामित्व नहीं था, वे उन्हें अपनत्वपने जानते नहीं थे, मात्र परज्ञेयपने जानते थे।

प्रश्न : शास्त्र में कहीं-कहीं अरिहन्त के आत्मा से भी निज-शुद्धात्मा को श्रेष्ठ कहा है, वह कैसे ? अपनी तो अपूर्ण अवस्था है, वह उनकी पूर्णावस्था से भी श्रेष्ठ कैसे ?

उत्तर : निज शुद्धात्मस्वभाव वर्तमान में ही परिपूर्ण है, उसी का ध्यान करने को कहा है, यहाँ त्रिकाल शुद्धस्वभाव की दृष्टि से कथन है, पर्याय यहाँ गौण है। इस आत्मा को अरिहन्त के लक्ष से राग की उत्पत्ति होती है और अपने स्वभाव के लक्ष से वीतरागता की उत्पत्ति होती है; इसलिए इस आत्मा के लिए अरिहन्त श्रेष्ठ नहीं, किन्तु अपना शुद्धस्वभाव ही श्रेष्ठ है। जिनकी ओर से लक्ष छोड़ना है, उनसे तेरा क्या प्रयोजन है ? ह्न सब लक्ष छोड़कर अपने ही चैतन्यस्वभाव का लक्ष कर ! क्योंकि अरिहन्त अवस्था प्रगट होने की सामर्थ्य तो तेरे में ही भरी है, अत: उसे उसी का ध्यान करके उसी में से प्रगट कर; अन्य पदार्थों के ध्यान को छोड़ ह्न ऐसा उपदेश है।

प्रश्न : देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा का विकल्प, उस तरफ का ज्ञान अथवा पंचमहाव्रत के विकल्परूप व्यवहाररत्नत्रय का भाव वास्तव में आत्मा नहीं है ह्न यह तो ठीक; परन्तु वह आत्मा की पर्याय भी नहीं है ह्न यह कैसे हो सकता है?

उत्तर : उस व्यवहार रत्नत्रय की पर्याय के साथ आत्मा की अभेदता नहीं है। ज्ञान की अवस्था होती है, वही आत्मा की पर्याय है और वह ज्ञान आत्मा के साथ अभेद होने से ज्ञान ही आत्मा है और राग अनात्मा है। सम्यग्दर्शन के पूर्व कषाय की मन्दता से विशुद्धिलब्धि भले हो; परन्तु वह आत्मा नहीं है और सम्यग्दर्शन का वास्तविक कारण भी नहीं है, वह तो राग है। राग की आत्मा में अभेदता नहीं है; अत: वह वास्तव में आत्मा की पर्याय नहीं। रागादिभाव खरगोश के सींग की तरह जगत् में होवें ही नहीं ह्न ऐसा नहीं हैं; वे तो आत्मा की पर्याय में एकसमयवर्ती सत्रूप हैं; परन्तु आत्मा के त्रिकालीस्वभाव की अपेक्षा वे असत् हैं।

समाचार दर्शन ह्न

श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर स्थित नवीनीकृत

प्रवचन मण्डप का उद्घाटन समारोह

जयपुर : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन के प्रवचन मण्डप के नवीनीकरण का कार्य विगत 5 महिनों से चल रहा था; जो कि अब अपनी पूरी साज-सज्जा के साथ बनकर तैयार हो चुका है। इस नवीनीकृत सुन्दर विशाल प्रवचन मण्डप का शुद्धिकरण एवं उद्घाटन समारोह आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के पूर्व शनिवार, दिनांक 25 जुलाई, 2009 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रात: नित्य-नियम पूजन एवं शांतिविधान के पश्चात् मंत्रोच्चार पूर्वक प्रवचन मण्डप का शुद्धिकरण हुआ। तत्पश्चात् जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई।

प्रवचन मण्डप का विधिवत् उद्घाटन श्रीमती शशि-प्रकाशचन्द, अमित, विवेक सेठी परिवार जयपुर के करकमलों से किया गया।

शांतिविधान के आयोजनकर्त्ता श्रीमती सूरजदेवी-जमनालाल कैलाशचन्द प्रकाशचन्द चेतनलाल रतनलाल सेठी परिवार लाल कोठी जयपुर थे। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री ने टोडरमल महाविद्यालय के छात्र विद्वानों के सहयोग से सम्पन्न कराये।

इस मांगलिक प्रसंग पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री जमनालालजी सेठी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के शिक्षा, श्रम एवं रोजगार मंत्री माननीय मास्टर भंवरलालजी मेघवाल तथा विशिष्ट अतिथि माननीय महेशजी जोशी (सांसद-जयपुर) के अतिरिक्त ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, देश की अनेक संस्थाओं से जुडे प्रसिद्ध समाजसेवी श्री एन.के.सेठी, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री राजेन्द्रजी गोधा आदि अनेक विशिष्ट महानुभाव मंचासीन थे।

सभी अतिथियों का तिलक एवं माल्यार्पण कर स्वागत स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका एवं ट्रस्टी ब्र. यशपालजी जैन ने किया। सभा को संबोधित करते हुये श्री प्रकाशचन्दजी सेठी जयपुर ने पुण्य-पाप के फल में हर्ष-विषाद न करने की भावना भाते हुये कहा कि मैं 30-35 वर्षों से टोडरमल स्मारक की गतिविधियों को देख रहा हूँएवं उसका लाभ ले रहा हूँ। यहाँ से पूरे विश्व में जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार का अद्भुत कार्य हो रहा है। मेरे लिये यह अपने घर जैसा है; अत: मेरे मन में इस प्रवचन हॉल के नवीनीकरण का भाव आया और इसके लिये डॉ. साहब ने स्वीकृति दी, इसकी मुझे प्रसन्नता है। मेरी भावना है कि यहाँ से तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ इसी प्रकार दिनदूनी रात चौगुनी बढती रहे।

संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं मंगलाचरण कु. परिणति पाटील ने किया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने प्रवचन मण्डप के नवीनीकरण का कार्य करानेवाले सरल हृदयी श्री प्रकाशचन्दजी सेठी को **श्रावक शिरोमणी** की उपाधि से अलंकृत किया।

लगातार पाँच माह से दिन-रात अथक् परिश्रम कर रहे युवा कार्यकर्त्ता श्री पीयूषजी शास्त्री, इंजिनीयर श्री अजितजी बंसल, श्री शैलेन्द्रजी गुरहा, आर्किटेक्ट श्री विकासजी जैन आदि का अभिनन्दन किया गया।

32 वाँ आध्यात्मिक शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 26 जुलाई से 4 अगस्त, 09 तक आयोजित 32 वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री जमनालालजी प्रकाशचन्दजी सेठी जयपुर के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री विमलकुमारजी जैन नीरु कैमिकल्स दिल्ली ने की।

सभा को संबोधित करते हुये विद्वत् शिरोमणी डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर ने श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शुरु होने की कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि आज महाविद्यालय से निकले 550 विद्यार्थी सब मेरे अपने हैं। मुझे खुशी है इस बात की कि आज देश की सभी मुमुक्षु संस्थाओं में हमारे महाविद्यालय के स्नातक विद्वानों ने अपनी बाग-डोर संभाल रखी है। मेरा सभी के लिये समान आशीर्वाद है। उन्होंने अपने उद्बोधन में आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन दिल्ली का उल्लेख करते हुये विदुषी राजकुमारी बेन एवं ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के कार्यों की सराहना की।

साथ ही वर्तमान माहौल को मद्देनजर रखते हुये उन्होंने कहा कि इस जीवन में मेरा किसी के प्रति कोई बैर-विरोध नहीं है तथा मैं अपने साथ कोई कलुषता ले जाना भी नहीं चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि यदि कोई मुझसे विरोध रखे तो उसे कमठ की तरह एक तरफा ही बैर रखना होगा। मेरी स्पष्ट नीति है कि मैं कभी भी तत्त्वप्रचार प्रसार की गतिविधियों में बाधक नहीं बना हूँ और सदैव ऐसी गतिविधियों की सहृदय प्रशंसा ही करता रहा हूँ। उन्होंने अपनी मातुश्री का स्मरण करते हुये कहा कि मेरी माँ कहा करती थीं कि 'बेटा पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाये पर माता कभी कुमाता नहीं होती; उसीप्रकार मैं कहना चाहता हूँ कि शिष्य भले ही कुशिष्य हो जाये पर यह गुरु कभी भी कुगुरु नहीं होगा।

डॉ. भारिल्ल के उक्त उद्बोधन को सुनकर उपस्थित जन समुदाय भाव-विभोर हो गया तथा सभी के हृदय का मनोमालिन्य धुल गया।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट का परिचय ट्रस्ट के उपाध्यक्ष ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर ने दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री गम्भीरमलजी प्रकाशचन्दजी सेमारीवाले अहमदाबाद ने किया। ध्वजारोहणकर्त्ता श्री सेवन्तिलालजी अमृतलाल गाँधी अहमदाबाद थे। इस अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ, पण्डित टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री निहालचन्दजी जैन पीतल फैक्ट्री जयपुर एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चित्र का अनावरण श्री सुभाषचन्दजी जैन नांगलोई दिल्ली ने किया।

शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के दोनों समय सारगर्भित प्रवचनों के साथ-साथ पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा एवं पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा के प्रवचन हुये।

प्रतिदिन चलनेवाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री द्वारा छहढाला, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित शांतिजी पाटील द्वारा तत्त्वार्थसूत्र, पण्डित संजीवजी गोधा द्वारा नैगमादि नय, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा द्वारा गोम्मटसार की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी युगल के सी.डी. प्रवचन एवं महाविद्यालय के छात्र विद्वान प्रवचन के बाद व्याख्यानों में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित गुलाबचन्दजी बीना के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: ५.३० बजे प्रौढ कक्षा में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, पण्डित कमलचन्दजी पिडावा, पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया के निर्देशन में पण्डित विकास शास्त्री एवं सहयोगियों ने बाल कक्षायें लीं।

इस अवसर पर आयोजित ६४ ऋद्धि विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

२ अगस्त को श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार समिति का अधिवेशन रखा गया, जिसकी अध्यक्षता ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर ने की। कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी जैन बांसवाडा ने किया। सभी कार्यक्रम ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली एवं श्री महापालजी ज्ञायक बांसवाड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुये। ●

चन्देरी में भूमि शुद्धि सम्पन्न

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ स्थानीय नये बस स्टेण्ड पर निर्माणाधीन भगवान ऋषभदेव समवशरण जिनमंदिर की भूमि शुद्धि का कार्यक्रम दिनांक 28 जून को सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुवात श्री चौबीसी जिनमंदिर में विधान से हुई। पश्चात् वहाँ से निर्माणाधीन समवशरण मंदिर तक घटयात्रा निकाली गई। जहाँ भूमि शुद्धि के बाद श्री कुन्दनलालजी भारतीय की अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर निर्माण का बीड़ा उठानेवाले श्री अखिल बंसल ने मंदिर निर्माण की आवश्यकता एवं रूपरेखा प्रस्तुत की। साथ ही श्री अमोलकचन्दजी एवं श्री विनयजी चौधरी ने अपने विचार व्यक्त किये। ज्ञातव्य है कि मंदिर निर्माण हेतु श्री अजितजी बंसल ने भूमि उपलब्ध कराई।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित सतीशजी जैन पिपरई ने सम्पन्न कराये।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 24 अगस्त 09 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। दिनांक 11 अगस्त 09 तक हमारे पास 530 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 10 अगस्त 09 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 372 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; जिनकी सूची जैन पथ प्रदर्शक के अगस्त (द्वितीय) अंक में प्रकाशित की गई है।

डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती वर्ष आयोजन समिति का गठन

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के 30 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर कोलारस में फैडरेशन ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की हीरक जयन्ती मनाने का निर्णय लिया था। इस आयोजन को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिये अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण जैनसमाज की प्रमुख संस्थाओं एवं पदाधिकारियों की आयोजन समिति का निम्नानुसार गठन किया गया है ह्न

अध्यक्ष : मुकुन्दभाई खारा, मुम्बई **महामंत्री :** अशोककुमार बड़जात्या, इन्दौर
मंत्री : महेन्द्रकुमार पाटनी, जयपुर

परमसंरक्षक

माननीय प्रदीप जैन : ग्रामीणविकास राज्यमंत्री, भारत सरकार
विजय जैन, अहमदाबाद : अध्यक्ष, श्री दि. जैन महासमिति
बलवंतराय जैन, भिलाई : अध्यक्ष, अखिल भा. दि. जैन परिषद्
विमल अजमेरा, इन्दौर : अध्यक्ष, दि.जैन सोश्यल ग्रुप फैडरेशन
श्रीमंत सेठ डालचन्द जैन, सागर : अध्यक्ष, अ.भा.तारण-त.दि. जैन महासभा
नरेशकुमार सेठी, जयपुर : अध्यक्ष, दि.जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
रवीन्द्र मालव, ग्वालियर : अध्यक्ष, अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ
चक्रेश जैन, दिल्ली : महामंत्री, दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

संरक्षक

सिंघई राजेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर : अध्यक्ष,श्री भा.दि.जैन परवार सभा, जबलपुर
मणीन्द्र जैन, दिल्ली : अध्यक्ष, अ.भा.जैसवाल जैन महासभा
ऋषभ चंदेरिया, कोतमा : अध्यक्ष, अ. भा. दि. जैन गोलापूर्व महासभा
हंसमुख गांधी, इन्दौर : अध्यक्ष, फैडरेशन ऑफ हूमड़ दि. जैन समाज
हुकमचन्द जैन शाह बजाज, इन्दौर : कार्याध्यक्ष, श्री दि. जैन महासमिति
डॉ. त्रिलोकचंद कोठारी, दिल्ली : चैयरमेन, ओम कोठारी ग्रुप ऑफ कंपनीज
सुमनभाई दोशी : दि. जैन संघ राजकोट

प्रेमचन्द बजाज : मुमुक्षु आश्रम कोटा	बालचंद पाटनी, कोलकाता
कान्तिभाई मोटानी, मुम्बई	भबूतमल भण्डारी, बैंगलौर
अजितप्रसाद जैन, दिल्ली	सम्पतकुमार गधइया, जयपुर
भीमजीभाई शाह, लंदन (U.K.)	अतुलभाई खारा, डलास (U.S.A.)
निरंजनभाई शाह, शिकागो (U.S.A.)	किरीटभाई गोशालिया, फिनिक्स (U.S.A)
महेन्द्रभाई शाह, मियामी (U.S.A.)	डॉ. महावीर शाह, कंटकी (U.S.A.)

परामर्शदाता : पण्डित ज्ञानचन्द जैन सोनागिर, पण्डित विमलकुमार झाँझरी उज्जैन
प्रचारमंत्री : अखिल बंसल, जयपुर मो.9929655786
कार्यालयमंत्री : पीयूष शास्त्री, जयपुर मो.9785643202

सहयोगी संस्थाएँ : 1. पूज्य श्रीकानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली 2. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर 3. श्री दिगम्बर जैन महासमिति, दिल्ली 4. अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्, दिल्ली 5. दि. जैन सोश्यल ग्रुप, फैडरेशन 6. गुजराती दि. जैन समाज महासंघ, मुम्बई 7. जैन अध्यात्म एकेडमी इन नार्थ अमेरिका (जाना) 8. मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा 9. तीर्थधाम सिद्धायतन, द्रोणगिरि 10. कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन 11. शासन प्रभावना ट्रस्ट (ढाई द्वीप जिनायतन), इन्दौर 12. श्री अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद्, दिल्ली 13. पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद्, जयपुर 14. राजस्थान प्रान्तीय भारत जैन महामण्डल 15. राजस्थान प्रान्तीय महिला भारत जैन महामण्डल 16. अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ 17. दिगम्बर जैन सर्वोदय स्वाध्याय समिति, कोल्हापुर 18. जैन नवयुवक मण्डल, बेलगाँव 19. दिगम्बर जैन समाज बापूनगर सम्भाग, जयपुर 20. श्री तारण-तरण दि. जैन तीर्थक्षेत्र निसईजी ट्रस्ट 21. जिनागम एवं श्रमण संस्कृति संरक्षण संवर्धन न्यास, ग्वालियर 22. अखिल भारतीय तारण-तरण दि. जैन महासभा, सागर 23. अखिल भारतीय तारण-तरण जैन युवा परिषद्, सागर 24. श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट, नागपुर।

❊ इस समिति का संयोजक जैन युवा फैडरेशन होने से उसकी क्षेत्रीय समितियाँ, समस्त पदाधिकारीगण और सभी सदस्य स्वाभाविकरूप से इसके सदस्य हैं ही।

इस प्रसंग पर देश के अनेक स्थानों पर इस आयोजन की तैयारी उत्साहपूर्वक की जा रही है। अभी तक प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर **कोलारस** (म.प्र.) में 25 मई, 09 को एवं 1 जुलाई, 09 को **लॉसएंजिल्स (अमेरिका)** में जाना संस्था द्वारा आयोजन किये जा चुके हैं। अब आगे 19 अगस्त,09 को अध्यात्म स्टेडी सर्किल द्वारा **भारतीय विद्याभवन मुम्बई** में, जयपुर जैनसमाज द्वारा 4 अक्टूबर को टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में, 20-21 अक्टूबर को **कोल्हापुर** में, 22-23 अक्टूबर को **बेलगाँव** में, 29 नवम्बर को **इन्दौर** में, 26 दिसम्बर को यात्रा संघ द्वारा **श्रवणबेलगोला** में, 8 से 11 मार्च, 2010 को **निसई** में अखिल भारतवर्षीय तारण समाज द्वारा, महावीर जयन्ती पर **उदयपुर** में एवं 25 मई, 2010 को प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर **देवलाली** में विशाल स्तर पर आयोजन होने जा रहे हैं।

ये सभी अभी तक के सुनिश्चित कार्यक्रम हैं। जैनसमाज की विविध पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से इस अवसर पर विशेषांक भी निकाले जा रहे हैं। ●

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें !

श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ, जयपुर के विशारद प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष एवं शास्त्री पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश लेनेवाले छात्र अपने आवेदन शीघ्र भेजें। प्रवेश हेतु अंतिम तिथि 31 अगस्त है। आवेदन पत्र श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर को पत्र लिखकर या **E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com से मंगा सकते हैं।

शोक समाचार

1. मुम्बई : अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुलभाई मोटानी की ध.प. **श्रीमती कल्पना मोटानी** का दिनांक 9 अगस्त को देह परिवर्तन हो गया है। आपके निधन पर फैडरेशन की अनेक शाखाओं से शोक सन्देश प्राप्त हो रहे हैं। अनेक स्थानों पर शोक सभायें आयोजित की गईं।

2. मुम्बई : श्री दिलीप भाई शाह-अहिंसा चैरिटेबल ट्रस्ट के पिता **श्री बेलजीराय सी. शाह** का 82 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आप गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त थे एवं टोडरमल स्मारक की समस्त गतिविधियों की हृदय से प्रशंसा किया करते थे।

3. ज्वालापुर (हरिद्वार) निवासी श्रीमती बिरमोदेवी ध.प. स्व. श्री शेखरचन्द जी का दिनांक 14 जुलाई को देहावसान हो गया है। आप सरल स्वभावी एवं स्वाध्यायी महिला थीं। आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से 500/- रुपये जैन पथ प्रदर्शक को प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

4. दलपतपुर निवासी ब्र. कुन्दनलालजी मोदी की धर्मपत्नी **श्रीमती कुसुमबाई** का दिनांक 2 जुलाई को शान्त परिणामों से देहावसान हो गया है। आप स्वाध्यायी महिला थीं। आपके प्रयत्नों से ही आपके पूरे परिवार में धार्मिक संस्कार हैं। ज्ञातव्य है कि आपके परिवार में अनेक शास्त्री विद्वान हैं। आपकी स्मृति में 1100/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

5. लाखेरी जिला बूंदी निवासी श्रीमती लाडकंवर जैन धर्मपत्नी श्री विमलकुमारजी का देहावसान हो गया है। अंतिम समय में समयसार गाथा-38 एवं मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ का चिन्तन करते हुये आपने देह का त्याग किया। आप जयपुर, सोनगढ, देवलाली, सोनागिरि आदि विभिन्न स्थानों पर आयोजित होनेवाले शिक्षण शिविरों में जाया करती थीं ।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

16 से 23 अगस्त	मुम्बई (भारतीय विद्या भवन)	श्वेताम्बर पर्यूषण
24 अग. से 3 सित.	मुम्बई (भारतीय विद्या भवन)	दशलक्षण महापर्व
27 सित. से 6 अक्टू.	जयपुर	शिक्षण शिविर
15 से 19 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
20 व 21 अक्टूबर	कोल्हापुर	प्रवचन
22 व 23 अक्टूबर	बेलगाँव	प्रवचन
28 अक्टूबर	मंगलायतन	दीक्षान्त समारोह
22 से 24 नवम्बर	होशंगाबाद	तारण जयन्ती
25 से 27 नवम्बर	देवलाली	वेदी प्रतिष्ठा
28 नवम्बर	मुम्बई	प्रवचन
29 नवम्बर	इन्दौर	प्रवचन
25 से 31 दिसम्बर	दक्षिण भारत	फैडरेशन यात्रा

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा ह्न

शाकाहार दिवस पर अनेक कार्यक्रम

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रान्त ने विश्व में शाकाहार और अहिंसा के प्रचार व शांति व सद्भाव की स्थापना के उद्देश्य से दिनांक 9 अगस्त को '**शाकाहार दिवस**' घोषित किया। ज्ञातव्य है कि इसी दिन सन् 1942 में भारत छोडो आन्दोलन का प्रारंभ हुआ था, उसी प्रसंग को आधार बनाकर मांसाहार छोड़ो आन्दोलन शुरु किया गया है।

इस प्रसंग पर जयपुर, उदयपुर, बांसवाड़ा, अलवर, पिडावा आदि स्थानों पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

1. फैडरेशन की जयपुर महानगर शाखा के तत्त्वावधान में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 13 छात्रों की टीम के माध्यम से रवीन्द्र मंच, रामनिवास बाग में विशाल स्तर पर मांसाहार के विरोध एवं शाकाहार व सदाचार प्रेरक एक 'संकल्प' नामक नाटिका का मंचन किया गया। इस कार्यक्रम में सर्वज्ञ भारिल्ल की सक्रिय भूमिका रही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि राज.के पूर्व गृहमंत्री माननीय श्री गुलाबचन्दजी कटारिया थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, श्री प्रकाशचन्दजी सेठी, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री अनिलजी जैन, श्री सुशीलजी गोदीका, श्री शांतिलालजी जैन आदि मौजूद थे।

अतिथियों का स्वागत फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं कार्यक्रम का संचालन डॉ. बी.सी. जैन ने किया।

2. उदयपुर : यहाँ इस प्रसंग पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उदयपुर जिला के माध्यम से फतह उच्च माध्यमिक विद्यालय में विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की गईं।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री सुरेशचन्द जैन ने की। मुख्य अतिथि प्रमुख समाज सेवी बी. एल. थाया (जैन) तथा विशिष्ट अतिथि श्री कन्हैयालाल दलावत, श्री कचरूलाल मेहता, श्री हीरालाल अखावत, श्री लक्ष्मीलाल बण्डी आदि मंचासीन थे।

फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। सभा के पश्चात् 60 बच्चों ने '**शाकाहार की दैनिक जीवन में उपयोगिता**' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता एवं 48 छात्र-छात्राओं ने चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया।

ज्ञातव्य है कि शाकाहार दिवस पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में 5 एवं चित्रकला प्रतियोगिता में 4 मुस्लिम बच्चों की बहुत आकर्षक प्रस्तुति रही।

सभी प्रतियोगियों को श्री शशिकान्त शाह द्वारा प्रभावना दी गई।

कार्यक्रम का संचालन प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीर प्रसाद जैन ने किया तथा आभार प्रदर्शन पं. खेमचन्दजी जैन ने किया।

हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न

डॉ. भारिल्ल को अमेरिका में अवार्ड

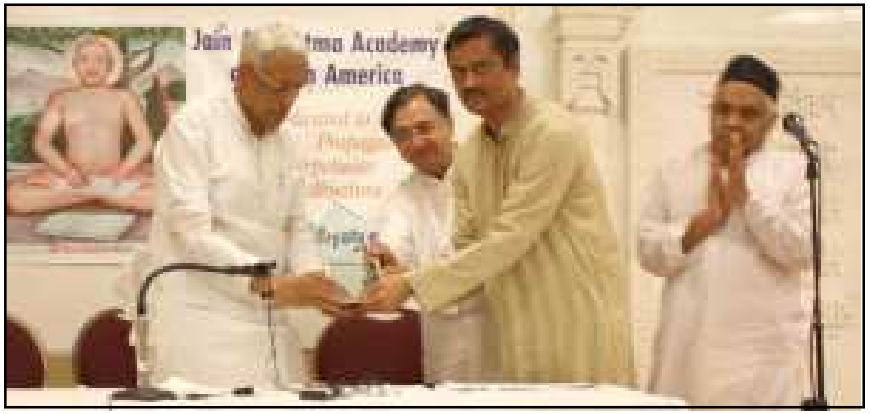

लॉस एंजिल्स में जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नोर्थ अमेरिका (**JAANA**) के नौवें वार्षिक आध्यात्मिक शिविर (दिनांक 29 जून से 2 जुलाई) के अवसर पर **JAANA** की ओर से श्री अतुलभाई खारा और श्री निरंजनभाई शाह ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को 75 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर अवार्ड अर्पित किया।

इस अवसर पर जाना के प्रेसिडेंट श्री दिलिपभाई शाह एवं लॉस एंजिल्स जैन सेन्टर के प्रेसिडेन्ट श्री अशोक सावला एवं श्री नरेश पालकीवाला ने दादा का शॉल भेंट कर अभिनन्दन किया। **JAINA** के प्रेसिडेन्ट ने दादा के 25 वर्षों के योगदान को सराहते हुये उनका आभार व्यक्त किया।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय से पण्डित धीरजभाई मेहता ने कई संस्मरणों को याद करते हुये कहा कि उन्हें भी दादा के साहित्य से बहुत कुछ सीखने को मिला है और वे भी व्यवहार से निश्चय की ओर बढने लगे हैं।

स्थानकवासी संप्रदाय से तरलाबेन दोशी ने पूरे जैन समाज के लिये दिये गये डॉ.भारिल्ल के अभूतपूर्व योगदान की खुले हृदय से सराहना की। उन्होंने कहा कि 'अमेरिका में आकर ही मुझे भारिल्लजी के साहित्य को पढने का मौका मिला। आज जैन समाज में ऐसा कोई दूसरा भारिल्ल हो तो बताओ।'

इस प्रसंग पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्री पूरणचन्दजी गोदीका की सुपुत्री श्रीमती रोशनी सेठी ने गुणमालाजी भारिल्ल का अभिनन्दन किया।

ध्यान रहे ऐसा ही अवार्ड गत वर्ष जैन एसोसिएशन इन नार्थ अमेरिका (जैना) ने भी आपको प्रदान किया था। इस अवसर पर उपस्थित सारे अध्यात्म प्रेमियों ने अध्यात्म मार्ग में लगे रहने और आगे बढने का संकल्प लिया। **ह्न अतुल खारा, मंत्री जाना**